



जै जै श्री वृन्दावन रिसकन प्राण हैं।
प्रभु-पद दाता सबनि, रसिहं की खान हैं॥
कैसीउ पापी करत, आनि जो बास है।
दूर होत तत्काल तासु की त्रास है॥
तत्काल त्रास जू जात, ताकी होत निर्मल गात है।
पावत महल की टहल जहँ नित, सह्चरिन की वास है॥
दसरत जुगल छबी नैंन अनुपम, करत गुन की गान है।
जै जै श्रीवृन्दावन रिसकन प्राण हैं॥ 1॥

जै जै श्रीवृन्दावन, अति शोभा मई ।
पिय प्यारी कौ धाम, प्रेम विधि-निर्मई ॥
अद्भूत छटा विलोकि, हगनि सुख होत है ।
निर्तत जुगल किशोर, सु जगमग जोति है ॥
जोत जगमग होत, तिनकी कहा शोभा गाइये ।
दस-नौ चरन के चिन्ह, श्री यमुना-पुलिन में पाइये ॥
गावत मोर मराल जिनकी, केलि कल नित नित नई ।
जै जै श्रीवृन्दावन, अति शोभा मई ॥ 2 ॥

श्री हित निमिष गोस्वामी जी महाराज श्री हित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन

www.shriradhavallabhlal.com



जै जै श्रीवृन्दावन कहा महिमा कहीं ।

मोमति एती नाहिं, अन्त ताकौ लाहों ॥

शेष महेश सुरेश, न पावत पार कौं ।

अज-मित हू वौराय, करत जु विचार कौ ॥
विचार कौं बौराय अज-मित, कहा गुन वरनन करूँ ।
अति दिव्य जिंदत मणीन भूमि सौं ध्यान कैसे हौं धरूँ ॥
निसि दिवस करत विचार यह, आकाश फल कैसे लहौ ।
जै जै श्रीवृन्दावन कहा महिमा कहौं ॥ 3 ॥

जै जै श्री वनराजिह मस्तक नाइये ।
याही के परताप जुगल पद पाइये ॥
कार्तिक सुदि तेरस कौं जन्म जू जानिये ।
दुतिय प्रभु कौ रूप, सु ताकौं मानिये ॥
मानि प्रभु कौ रूप ताकौं, विटप वेलि भ्राज हीं ।
भानुजा के तीर दोऊ, स्याम स्याम राज हीं ॥
वृन्दावन हित रूप मंगल, रिसक जन सुखादाइये ।
जै जै श्री वनराजिह मस्तक नाइये ॥ 4 ॥

श्री हित निमिष गोस्वामी जी महाराज श्री हित राधावल्लभ लाल मंदिर , वृंदावन

www.shriradhavallabhlal.com